चंद्रयान और उसके पेलोड

संदर्भ: हाल ही में, इसरो ने जीएसएलवी मार्क 3 हेवी-लिफ्ट प्रक्षेपण यान , जिसे 'बाहुबली' रॉकेट भी कहा जाता है, का उपयोग करके भारत के तीसरे चंद्र मिशन, चंद्रयान -3 को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया।

चंद्रयान-3 मिशन:

- **प्रक्षेपण की तारीख और समय:** 14 जुलाई, 2023 दोपहर 2:35 बजे IST
- **लॉन्चिंग एजेंसी:** भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो)
- **उद्देश्य:** चंद्रयान-3 भारत का तीसरा चंद्र अन्वेषण मिशन है, जिसका उद्देश्य चंद्र सतह पर सुरक्षित लैंडिंग और रोवर गतिशीलता की क्षमता का प्रदर्शन करना है।
- **मॉड्यूल:** मिशन में तीन प्रमुख मॉड्यूल शामिल हैं - प्रोपल्शन मॉड्यूल, लैंडर मॉड्यूल (विक्रम) और रोवर (प्रज्ञान)।
- **ऑर्बिटर:** चंद्रयान-2 के विपरीत, चंद्रयान-3 में ऑर्बिटर नहीं होगा। प्रोपल्शन मॉड्यूल संचार रिले उपग्रह के रूप में कार्य करेगा।

पेलोड:

- **रम्भा (रेडियो एनाटॉमी ऑफ मून बाउंड हाइपरसेंसिटिव आयनोस्फीयर एंड एटमॉस्फियर):** यह निकट-सतह प्लाज्मा घनत्व और समय के साथ इसकी विविधताओं को मापेगा।
- **आईएलएसए (चंद्र भूकंपीय गतिविधि के लिए उपकरण):** यह लैंडिंग स्थल के पास भूकंपीयता पर नज़र रखेगा और चंद्र क्रस्ट और मेंटल की संरचना की जांच करेगा।
- **एलआईबीएस (लेजर-प्रेरित ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोप):** लैंडिंग क्षेत्र में चंद्र मिट्टी और चट्टानों की मौलिक संरचना निर्धारित करेगा है।
- **एपीएक्सएस (अल्फा पार्टिकल एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर**): यह चंद्र सतह की रासायनिक और खनिज संरचना की जाँच करेगा।
- **आकार (रहने योग्य ग्रह पृथ्वी की स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री):** यह निकट-अवरक्त रेंज में पृथ्वी के स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्रिक का अध्ययन करेगा, जो एक्सो-प्लैनेट जीवन की खोज के लिए आवश्यक है।
- **इमेजिंग सिस्टम:** चंद्र लैंडर विक्रम अपनी अन्वेषण गतिविधियों के दौरान रोवर प्रज्ञान की छवियों को कैप्चर करेगा।
- **रेगोलिथ के पिघलने का प्रयोग:** विक्रम चंद्रमा की सतह (रेगोलिथ) के एक हिस्से को पिघलाने और प्रक्रिया के दौरान उत्सर्जित गैसों का अध्ययन करने के लिए लेजर का उपयोग करेगा।

चंद्रयान-2 के बारे में:

- **लॉन्च तिथि**: 22 जुलाई, 2019
- **लॉन्चिंग एजेंसी**: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो)
- **उद्देश्य**: चंद्रयान-2 का उद्देश्य चंद्रमा, विशेष रूप से चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव का और अधिक अन्वेषण करना और चंद्र स्थलाकृति, खनिज विज्ञान और जल या बर्फ की उपस्थिति पर गहन अध्ययन करना है।

पेलोड:

- **ऑर्बिटर:** यह डेटा और तस्वीर के लिए चंद्र कक्षा की लगातार परिक्रमा कर रहा था।
- **विक्रम लैंडर**: यह दक्षिणी ध्रुव के पास सॉफ्ट लैंडिंग के लिए डिज़ाइन किया गया था।
- **प्रज्ञान रोवर**: यह चंद्रमा की सतह का अन्वेषण करने के लिए भेजा गया था।
- **एक्सएसएम (सौर एक्स-रे मॉनिटर)**: यह चंद्र सतह पर प्रमुख तत्वों का विश्लेषण करने के लिए था।
- **क्लास (बड़े क्षेत्र सॉफ्ट एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर):** यह चंद्र बाह्यमंडल तत्वों का अध्ययन के लिए भेजा गया था।
- **डीएफएसएआर (डुअल फ्रीक्वेंसी सिंथेटिक एपर्चर रडार):** यह चंद्रमा पर जल या बर्फ जमाव की जांच करने के लिए भेजा गया था।
- **डीएफआरएस (दोहरी आवृत्ति रेडियो विज्ञान प्रयोग)**: इसका कार्य चंद्रमा के आयनमंडल में इलेक्ट्रॉन घनत्व को मापना था।
- **डीपीआर (दोहरी आवृत्ति वर्षा रडार):** यह जल-बर्फ वितरण और अणुओं का आकलन करने के लिए था।
- **एसएफआरएसई (एकल आवृत्ति रेडियो विज्ञान प्रयोग):** यह चंद्रमा के आयनमंडल के इलेक्ट्रॉन घनत्व की जांच करने के लिए था।

चंद्रयान-1 के बारे में:

- **लॉन्च दिनांक:** 22 अक्टूबर 2008
- **लॉन्चिंग एजेंसी**: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो)
- **उद्देश्य**: चंद्रयान-1 भारत का प्रथम चन्द्र मिशन था और इसका उद्देश्य चंद्रमा की सतह का पता लगाना, उसके खनिज विज्ञान का अध्ययन करना और पानी के अणुओं की उपस्थिति की खोज करना था।

पेलोड:

- **टीएमसी (टेरेन मैपिंग कैमरा):** इसके मैपिंग और विश्लेषण के लिए चंद्र सतह की उच्च-रिज़ॉल्यूशन छवियां कैप्चर की गईं।
- **हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजर**:यह चंद्रमा की सतह पर खनिजों और संसाधनों की पहचान करने के लिए उपयोग किया जाता है।
- **एलएलआरआई (लूनर लेजर रेंजिंग इंस्ट्रूमेंट):** इसके द्वारा चंद्रमा की सतह से लेजर किरणों को परावर्तित करके पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की दूरी को मापा गया।
- **एमआईपी (चंद्रमा प्रभाव जांच):** इसके द्वारा चंद्रमा की सतह की विशेषताओं और संरचना पर मूल्यवान डेटा प्रदान किया गया।

भारत-इंडोनेशिया आर्थिक और वित्तीय संवाद

संदर्भ: हाल ही में, गुजरात के गांधीनगर में आयोजित G20 वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंक गवर्नर्स (FMCBG) की तीसरी बैठक के दौरान भारत-इंडोनेशिया आर्थिक और वित्तीय संवाद की आधिकारिक घोषणा की गई।

भारत-इंडोनेशिया आर्थिक और वित्तीय संवाद:
यह भारत और इंडोनेशिया के बीच सहयोग बढ़ाने और दोनों देशों के बीच आर्थिक और वित्तीय संबंधों को मजबूत करने के लिए स्थापित एक द्विपक्षीय मंच है। इसका उद्देश्य आपसी विकास को सुविधाजनक बनाना, साझा चुनौतियों का समाधान करना और क्षेत्रीय एवं वैश्विक आर्थिक स्थिरता में योगदान देना है।

- **उद्देश्य:** दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों और सहयोग को मजबूत करने के लिए हाल ही में भारत-इंडोनेशिया आर्थिक और वित्तीय संवाद शुरू किया गया था।
- **प्रतिभागी:** संवाद में भारत और इंडोनेशिया के प्रतिनिधि शामिल हैं, जिनका ध्यान विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर सहयोग को बढ़ावा देने पर है।
- **फोकस क्षेत्र:** संवाद का उद्देश्य भारत और इंडोनेशिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ाना, वित्तीय सेवाओं को बढ़ावा देना और बुनियादी ढांचे की विकास परियोजनाओं को सुविधाजनक बनाना है।
- **वैश्विक एजेंडा:** वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस बात पर जोर दिया कि संवाद वैश्विक एजेंडे को आगे बढ़ाने में भी योगदान देगा, खासकर उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के नजरिए से।
- **क्षेत्रीय सहयोग:** संवाद का महत्व द्विपक्षीय संबंधों से परे है, क्योंकि इसका उद्देश्य भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच बेहतर सहयोग को बढ़ावा देना है।
- **वैश्विक स्थिरता:** संवाद का एक प्राथमिक उद्देश्य भारत और इंडोनेशिया के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत करके वैश्विक आर्थिक और वित्तीय स्थिरता में योगदान करना है।
- **संभावित परिणाम:** संवाद के माध्यम से, दोनों देश आर्थिक विकास, निवेश प्रवाह में वृद्धि और विभिन्न क्षेत्रों में विस्तारित सहयोग के लिए नए अवसर तलाशना चाहते हैं।
- **व्यापार और विकास पर संभावनाएँ:** दोनों देश व्यापार और विकास में सहयोग की पर्याप्त संभावनाएँ देखते हैं, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन, वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य और निवेश सहयोग के मुद्दों से संबंधित।
- **डिजिटल प्रौद्योगिकी और भुगतान प्रणालियों पर फोकस:** संवाद में डिजिटल प्रौद्योगिकी, केंद्रीय बैंकों के तहत भुगतान प्रणालियों और स्थानीय मुद्राओं के उपयोग में सहयोग का पता लगाया जाएगा।
- **वित्तीय कार्रवाई टास्क फोर्स पर समर्थन:** भारत, वित्तीय कार्रवाई टास्क फोर्स में अपनी सदस्यता के संबंध में इंडोनेशिया के एजेंडे को समर्थन देता है।

मेकांग-गंगा सहयोग

संदर्भ: हाल ही में, विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने छह देशों के साथ 11वीं मेकांग-गंगा सहयोग बैठक में भारत के लिए मेकांग के महत्व पर प्रकाश डाला।

मेकांग-गंगा सहयोग क्या है?

मेकांग-गंगा सहयोग (एमजीसी) एक पहल है जो छह देशों - भारत और पांच आसियान देशों, अर्थात् कंबोडिया, लाओ पीडीआर, म्यांमार, थाईलैंड और वियतनाम को एकजुट करती है। 10 नवंबर, 2000 को वियनतियाने, लाओस में पहली एमजीसी मंत्रिस्तरीय बैठक के दौरान स्थापित, एमजीसी का नाम क्षेत्र की दो प्रमुख नदियों, गंगा और मेकांग से लिया गया है। यह सहयोग इन दो प्राचीन और सभ्यता-समृद्ध नदियों के विशाल घाटियों में रहने वाले लोगों के बीच घनिष्ठ संबंधों, अधिक समझ और बेहतर सहयोग को बढ़ावा देना चाहता है।

सहयोग के उद्देश्य और स्तंभ:

मेकांग-गंगा सहयोग का प्राथमिक उद्देश्य सदस्य देशों के बीच मित्रता, एकजुटता और सहयोग बढ़ाना है। इसे प्राप्त करने के लिए, एमजीसी को सहयोग के चार प्रमुख स्तंभों के आसपास संरचित किया गया है:

1. संस्कृति:

एमजीसी सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और सदस्य देशों की साझा विरासत को संरक्षित करने का प्रयास करता है। यह संगीत, नृत्य और रंगमंच जैसे विभिन्न कलात्मक क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है। विरासत स्थलों और कलाकृतियों की सुरक्षा और संरक्षण के प्रयास किए जाते हैं, जबकि क्षेत्र के विश्वविद्यालय नेटवर्किंग और ट्विनिंग व्यवस्था के माध्यम से जुड़े हुए हैं।

2. शिक्षा:

क्षमता निर्माण और शैक्षिक सहयोग एमजीसी के एजेंडे में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आसियान एकीकरण पहल (आईएआई) के तहत, कंबोडिया, लाओस, म्यांमार और वियतनाम में अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र (सीईएलटी) स्थापित किए गए हैं। भारत एमजीसी देशों को वार्षिक छात्रवृत्ति भी प्रदान करता है तथा संग्रहालय विज्ञान और संरक्षण तकनीकों में विशेष छात्रवृत्ति प्रदान करता है। इस शैक्षिक आदान-प्रदान का उद्देश्य मानव संसाधन विकास को मजबूत करना और एक-दूसरे की शैक्षिक प्रणालियों की गहरी समझ को बढ़ावा देना है।

3. परिवहन और संचार:

एमजीसी सदस्य देशों के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए परिवहन नेटवर्क और संचार लिंक में सुधार पर ध्यान केंद्रित करता है। "ईस्ट-वेस्ट कॉरिडोर" और "ट्रांस-एशियन हाईवे" जैसी परियोजनाओं का उद्देश्य क्षेत्रीय विकास और एकीकरण में योगदान करते हुए वस्तुओं और लोगों की सुचारू आवाजाही को सुविधाजनक बनाना है। हवाई सेवाओं, आईटी बुनियादी ढांचे और नेटवर्क को विकसित करने, आसान यात्रा को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने के प्रयास किए जाते हैं।

4. पर्यटन:

पर्यटन एमजीसी सहयोग का एक महत्वपूर्ण पहलू है, और क्षेत्र से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए संयुक्त विपणन के लिए रणनीतिक अध्ययन आयोजित किए जाते हैं। एमजीसी पर्यटन के अवसरों को बढ़ाने के लिए यात्रा को सुविधाजनक बनाने, मल्टीमॉडल संचार का विस्तार करने और सांस्कृतिक-धार्मिक पैकेज टूर को बढ़ावा देने की दिशा में भी काम करता है। इन पहलों का उद्देश्य साझा अनुभवों के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, रोजगार पैदा करना और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देना है।

कार्य तंत्र और भारत का क्षेत्र-वार दृष्टिकोण:

एमजीसी के कार्य तंत्र में वार्षिक मंत्रिस्तरीय बैठकें, वरिष्ठ अधिकारियों की बैठकें (एसओएम) और शिक्षा, पर्यटन, संस्कृति, कार्य योजनाओं एवं संचार पर ध्यान केंद्रित करने वाले पांच कार्य समूह शामिल हैं। एमजीसी के भीतर भारत का दृष्टिकोण पर्यटन, क्षमता निर्माण, शिक्षा, कनेक्टिविटी, संस्कृति, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जल संसाधन प्रबंधन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) सहित विभिन्न क्षेत्रों को शामिल करता है।

DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

17 July 2023

NEWS IN BETWEEN THE LINES

हूलॉक गिब्बन

सन्दर्भ: चीन में हाल की एक घटना ने भारत के एकमात्र वानर, हूलॉक गिब्बन को लेकर चिंताओं को प्रकट किया है, जो की विलुप्त होने के उच्च जोखिम में है यह वानरों की 20 प्रजातियों में से एक है।

हूलॉक गिब्बन क्या है?

हूलॉक गिब्बन, जिसे वैज्ञानिक रूप से हूलॉक के नाम से जाना जाता है, यह दक्षिण पूर्व एशिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जंगलों के मूल वानरों की एक प्रजाति है।

वैश्विक चिंता: चीन में आयोजित गिब्बन पर एक वैश्विक कार्यक्रम में भारत की एकमात्र वानर प्रजाति हूलॉक गिब्बन की संरक्षण स्थिति को चिंता का विषय मना गया।

भारत में हूलॉक गिब्बन: हूलॉक गिब्बन भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए अद्वितीय वानर प्रजाति है।

घटती संख्या: हूलॉक गिब्बन की अनुमानित जनसंख्या 12,000 है, और गिब्बन की सभी 20 प्रजातियाँ विलुप्त होने के उच्च जोखिम में हैं।

आनुवंशिक विश्लेषण: 2021 में सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी (सीसीएमबी) के हालिया शोध ने पुष्टि की कि भारत में वानर की केवल एक प्रजाति है, जो दो प्रजातियों के बारे में पहले की धारणाओं को खारिज करती है।

आईयूसीएन स्थिति:

पूर्वी हूलॉक: सुभेद्य

पश्चिमी हूलॉक: लुप्तप्राय

इनकी संख्या में कमी का मूल कारण पूर्वोत्तर भारत में वनों की कटाई और शिकार है।

सिकाडा

सन्दर्भ : हाल ही में, दक्षिण भारत के कई हिस्सों में आमतौर पर पाए जाने वाले 'विदेशी' सिकाडा को भारतीय पहचान प्रदान की गई है।

सिकाडा क्या है?

सिकाडा एक विशिष्ट गायन ध्वनि वाला कीट है, जो मुख्य रूप से नर, मादाओं को आकर्षित करने के लिए, गाते हैं। इसके पारदर्शी पंख और बड़ी आंखें होती हैं, यह अक्सर पेड़ों में पाया जाता है। यह समय-समय पर बड़ी संख्या में उभरता है, जिसे "सिकाडा झुंड" या "ब्रूड्स" के रूप में जाना जाता है इसे सामन्यतः दुनिया भर में पाया जाता है।

नया नाम: पुराण चीवीदा (इसके मलयालम नाम "चीवीडु" के बाद)

गलत पहचान: पहले गलत पहचान पुराण टिग्रीना के रूप में की गई थी, जो 1850 में मलेशिया में वर्णित एक प्रजाति है।

सुधार का आधार: पुरुष जननांग और ऑपरकुलम में अंतर होना है।

सिकाडा इसके लिए महत्वपूर्ण हैं:

- मिट्टी में पोषक तत्वों का चक्रण।
- शिकारियों के लिए भोजन के रूप में काम करना।
- परागण में अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करना।
- पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य का संकेत।
- सांस्कृतिक महत्व।

यूनाइटेड नागा काउंसिल

सन्दर्भ : हाल ही में मणिपुर की तलहटी में हिंसा घटनाएं घटित हुई हैं।

यूनाइटेड नागा काउंसिल क्या है?

यूनाइटेड नागा काउंसिल (यूएनसी) भारत के मणिपुर राज्य में स्थित एक नागा आदिवासी संगठन है। यह एक प्रतिनिधि संस्था है जो मणिपुर में रहने वाले नागा समुदाय के अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए काम करती है।

गठन: इसका गठन 1994 में मणिपुर में नागा समुदाय के हितों का प्रतिनिधित्व और सुरक्षा करने के उद्देश्य से किया गया था।

उद्देश्य: यूएनसी क्षेत्र में नागा लोगों के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अधिकारों की सुरक्षा की वकालत करता है।

संघर्ष में भूमिका: यूएनसी की गतिविधियाँ पूर्वोत्तर में लंबे समय से चले आ रहे नागा विद्रोह मुद्दे से निकटता से जुड़ी हुई हैं।

कानूनी मान्यता: यह सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संगठन नहीं है और इसकी स्थिति कानूनी और राजनीतिक बहस का विषय रही है।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

सन्दर्भ: हाल ही में आईसीएआर के 95वें स्थापना दिवस के दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री (नरेंद्र सिंह तोमर) ने पशुपालन और मत्स्य पालन में अनुसंधान पर जोर दिया.

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद:

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है।

स्थापना: आईसीएआर की स्थापना 16 अगस्त 1929 को हुई थी।

कार्य: यह भारत सरकार के कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन है।

अनुसंधान और विकास: आईसीएआर देश भर में कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार गतिविधियों के समन्वय और प्रचार के लिए जिम्मेदार है।

फसल उत्पादन: यह कृषि प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे विश्व स्तर पर विभिन्न फसलों के अग्रणी उत्पादक के रूप में भारत की स्थिति स्थापित होती है।

पशुपालन और मत्स्य पालन: आईसीएआर इन क्षेत्रों में उत्पादन और विकास को बढ़ावा देने के लिए पशुपालन और मत्स्य पालन के क्षेत्रों में अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करता है।

कृषि विश्वविद्यालय: आईसीएआर भारत में कृषि शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा देने वाले विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों और संस्थानों का संचालन और समर्थन करता है।

दृष्टिकोण: आईसीएआर का दृष्टिकोण वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी प्रगति के माध्यम से कृषि उत्पादकता, स्थिरता और समग्र ग्रामीण विकास को बढ़ाना है।

नॉटिका

सन्दर्भ : हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र के स्वामित्व वाला जहाज, नौटिका, विनाशकारी तेल रिसाव को रोकने के लिए एक जोखिम भरे अभियान के लिए युद्धग्रस्त यमन पहुंचा है।

नॉटिका: नॉटिका संयुक्त राष्ट्र के स्वामित्व वाला एक जहाज है, जिसे विशेष रूप से युद्धग्रस्त यमन के तट पर एक महत्वपूर्ण ऑपरेशन के लिए तैनात किया गया है।

जोखिम भरा ऑपरेशन: नॉटिका के मिशन में क्षतिग्रस्त टैंकर, एफएसओ सेफ़र से दस लाख बैरल से अधिक तेल पंप करने का जोखिम भरा ऑपरेशन शामिल है।

एफएसओ सेफ़र: एफएसओ सेफ़र एक ख़राब सुपर-टैंकर है जो लाल सागर में यमन के तट पर फंसा हुआ है। यमन में चल रहे संघर्ष के कारण 2015 में जहाज पर रखरखाव कार्यों को निलंबित कर दिया गया था, जिससे इसमें "किसी भी समय विस्फोट" की संभावना के बारे में चिंताएं उत्पन्न हो गई हैं।

पर्यावरणीय आपदा निवारण: नॉटिका के मिशन का प्राथमिक उद्देश्य विनाशकारी तेल रिसाव को रोकना है जो क्षेत्र में पारिस्थितिक आपदा का कारण बन सकता है।

ऑपरेशन का उद्देश्य: संयुक्त राष्ट्र के स्वामित्व वाला जहाज लाल सागर में लंगर डाले हुए खराब टैंकर एफएसओ सेफ़र से 1.14 मिलियन बैरल तेल स्थानांतरित करेगा।

पर्यावरण संरक्षण: मिशन का उद्देश्य यमन के पर्यावरण, मछली पकड़ने वाले समुदायों और महत्वपूर्ण बंदरगाहों को संभावित तेल रिसाव से बचाना है।

क्षेत्रीय प्रभाव: रिसाव सऊदी अरब, इरिट्रिया, जिबूती और सोमालिया को प्रभावित कर सकता है, जिसकी संभावित सफाई लागत 20 बिलियन डॉलर से अधिक हो सकती है।

प्रवाल विरंजन

प्रवाल क्या है?

प्रवाल छोटे समुद्री जीवों की कॉलोनियों को संदर्भित करता है जिन्हें पॉलीप्स कहा जाता है जो एक कठोर बाह्यकंकाल बनाने के लिए कैल्शियम कार्बोनेट का स्राव करते हैं। ये कॉलोनियां बड़े, विविध पारिस्थितिक तंत्र का निर्माण करते हैं जिन्हें प्रवाल भित्तियों के रूप में जाना जाता है।

प्रवाल विरंजन: प्रवाल विरंजन एक ऐसी घटना है जो तब होती है जब तनाव या पर्यावरणीय परिस्थितियों में बदलाव, जैसे पानी के तापमान में वृद्धि, उच्च अम्लता या प्रदूषण के कारण प्रवाल अपना जीवंत रंग खो देते हैं और सफेद हो जाते हैं।

सहजीवी संबंध: अधिकांश प्रवालों का जूज़ेंथलाई, एक प्रकार के शैवाल के साथ सहजीवी संबंध होता है। शैवाल प्रवालों को पोषक तत्व प्रदान करते हैं और बदले में खनिज और कार्बन डाइऑक्साइड प्राप्त करते हैं।

विरंजन के कारण: विरंजन तब होता है जब समुद्र के वातावरण में परिवर्तन होता है, जैसे कि बढ़ता तापमान, बढ़ी हुई अम्लता, अत्यधिक प्रकाश, कम ज्वार, जल प्रदूषण और जलवायु संकट-प्रेरित पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन।

उत्तरजीविता क्षमता: जबकि विरंजन तनाव का संकेत है और इससे प्रवाल की मृत्यु हो सकती है, कुछ कॉलोनियों ने लचीलापन दिखाया है और विरंजन की घटनाओं से बच गए हैं। उल्लेखनीय उदाहरणों में जापान के इरिओमोटे द्वीप के पास का प्रवाल शामिल है जो 2016 की विरंजन घटना के बाद पाया गया था।

समाचार में स्थान **सैंड पॉइंट**	**संदर्भ:** हाल ही में, 15 जुलाई, 2023 को, अपतटीय अलास्का प्रायद्वीप क्षेत्र, विशेष रूप से सैंड पॉइंट के पास, 7.2 तीव्रता का एक शक्तिशाली भूकंप आया। **भौगोलिक अवस्थिति:** सैंड पॉइंट संयुक्त राज्य अमेरिका के अलास्का के अलेउतियन ईस्ट बरो में स्थित एक छोटा सा शहर है। यह लगभग 55.3447° उत्तर अक्षांश और 160.4914° पश्चिम देशांतर पर स्थित है। यह पॉपोफ द्वीप पर स्थित है, जो शुमागिन द्वीप समूह का हिस्सा है। **अर्थव्यवस्था:** सैंड पॉइंट की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से वाणिज्यिक मछली पकड़ने पर आधारित है, विशेष रूप से सैल्मन, हलिबूट और केकड़े के लिए। **प्राकृतिक खतरे:** भूकंपीय रूप से सक्रिय प्रशांत रिंग ऑफ फायर के साथ स्थित होने के कारण यह क्षेत्र भूकंप और सुनामी के लिए अतिसंवेदनशील है। **स्वदेशी विरासत:** इस क्षेत्र में एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, जिसमें हजारों वर्षों से क्षेत्र में रहने वाले अलेउत और अलुतिइक मूल समुदायों का इतिहास है।